International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 4, April- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018 |**Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015**

अर्थ तंत्र का मानव जीवन पर प्रभाव

डॉ अनुपम शर्मा
लक्ष्मनगढ(सीकर)
राजस्थान

भारत मे समाज तंत्र की व्यवस्था अराजकता को रोकने के लिये मनीषियों द्वारा अत्यधिक चिंतन मनन तथा युगों युगों के अनुभवों के पश्चात् प्रारम्भ की गयी।वस्तु विनिमय सही मूल्यांकन मे बाधा डालता था।सटीक मूल्यांकन हेतु अर्थव्यवस्था की स्थापना हुई।कौडी से दमडी,दमडी से धेला धेला से पाई,पाई से पैसा,पैसे से आना,आने के पडाव पार करके अर्थतंत्र रूपये तक पहुंचा(संदर्भ-गूगल)।अभी जन्म से लेकर वर्तमान तक रूपया बहुत बडा हो गया है,इतना बडा कि वैभव के सारे उपमान तोड जमीन से ऊपर उडने लगा है।इतिहास गवाह है कि जब जब जिसने भी जमीन छोडी है तब तब वह समाप्ति की ओर अग्रसर हुआ है।इतना बडा हो गया है रूपया कि जिसने उसका सृजन किया वह उसी को भूलने लगा है।आप यकीन मानिये यही वह बिन्दु है जहां से वह अपने पतन की ओर अग्रसर हो रहा है।सृष्टा से बडा कोई नहीं,उसी सृष्टा ने जब अपना दंड चलाया तो घमंड मे आकंठ डूबे रूपये को सृष्टा ने कोरोना मे उसकी औकात दिखा दी,बैड मे भरकर रखने वाले लोगों के हाथों से उनके प्रियजन एक झटके मे छीन लिये।काला चश्मा लगाकर लोगों के सर चढकर बोलने वाला रूपया बिल्कुल भी नहीं चल सका।पैरों तले रौंदने वाले sweeper के सामने बडे,बडे सत्ता और धनाधिकारी को हाथ जोडकर बाडी उठवानी पडी।पर मनुष्य को उसी सृष्टा ने एक चीज और दी है,वह है भूलने की आदत।2 वर्ष भी नहीं बीते और रूपया वापस काला चश्मा पहनकर घूम रहा है।पर मानकर चलिये कि इसकी स्थिति अब वही हो रही है जो रियासतें चली जाने के बाद रियासतदारों की होती है।अभी सलाम करने वाले किराये के आदमी रख लिये हैं,वैभव की कथायें रह गई हैं।परन्तु इसका जो स्वभाव है वह कभी नहीं बदलेगा।अर्थ की विशेषता है कि उसमे मानवीयता,मानवमूल्य,परोपकार आदि लेश मात्र भी नहीं होते।अर्थ इतना भारी होता है कि उसे पचा पाना सब के वश की बात नहीं होती।परन्तु खूबसूरत इतना कि किसी का भी मन मोह ले।उससे पहली नजर का प्यार सबकुछ न्यौछावर करने को मजबूर करता है।उसको पाने की लालसा मे हर कोई अंधा हो जाता है।वैध,अवैध,नैतिक,अनैतिकता के सम्पूर्ण उपमान उस क्षण विमुख हो जाते हैं।जब यह पैदा हुआ था तब बहुत सारी चीजें इसकी पहुंच से बाहर थी।जैसे जैसे यह बडा होता गया वैसे वैसे दृष्य और अदृष्य सभी जगह अपना स्थान बना लिया।अब तो स्थिति यह हो गई है कि यह उश्रृंखलता की सभी दीवारें पार कर चुका है।आदमी का बनाया हुआ,आदमी और उसके अस्तित्व को ही नकारने लगा है।यहीं से यह पतनोन्मुख हो रहा है,पर रूको इतना जल्दी नहीं।अभी यह समझ नहीं पा रहा है,इसलिये कोरोना,नोटबंदी,GST,Digital currency जैसे कई झटके इसके लग चुके हैं।अभी और लगेंगे।परिवर्तन ऐसे ही होते हैं जब महामारी,युद्ध,दुर्भिक्ष,बाढ,तूफान एक के बाद एक आते हैं।आसमान चढकर बडे बोल बोलने वाले अर्थयुग का अंत आ रहा है।कोरोना के बाद महसूस होने लगा है कि अर्थ आपको भोजन दे सकता है पर भूख नहीं,कार दे सकता है पर पैर नहीं,इलाज दे सकता है स्वास्थ्य नहीं,संसाधन दे सकता है पर सुख नहीं।आर्थिक दृष्टि से विभाजन समाप्ति की ओर अग्रसर है।बहुत रूपया होने के बाद फिर जो भाव जाग्रत होता है वह दान का भाव है।क्योंकि उस स्तर पर जाकर भी यही लगता है कि अभी भी कुछ अधूरा है।तात्पर्य यह है कि आज भी वह मनुष्य से बडा नहीं हुआ है।पर,पर वह मान नहीं रहा है ।वो पहले भी जीविकोपार्जन के लिये साधन था,आगे भी वही रहेगा।संसाधन जुटाये थे जीवन को सरल बनाने के लिये,पर वो अब काम के कम,दिखाने के अधिक हो गये हैं।ये तो हमने बताये अर्थ के प्रभाव जो कि मनोवैज्ञानिक स्तर पर मनुष्य के जीवन पर कैसे पडते हैं?अब अगर हम बात करें भारतीय और विश्व स्तरीय अर्थव्यवस्था की तो यकीनन आज का युग बडे परिवर्तन की ओर इशारा कर रहा है।भारत मे इससे पहले एक परिवर्तन जो हुआ वह था स्वतंत्रता प्राप्ति का

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 4, April- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018 |**Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015**

युग। दूसरा परिवर्तन अब दिखाई दे रहा है जिसमे भारत विश्व मे अर्थव्यवस्था मे पांचवें पायदान पर पहुंच गया है और शीघ्र ही तीसरी सबसे बडी अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर है।(संदर्भ-प्रधानमंत्री श्रीमान् नरेन्द्रजी मोदी अमेरिकन संसद भाषण)अगर देखा जाये तो सम्पूर्ण विश्व की अर्थव्यवस्था डगमगा रही है तथा नये उपमान गढे जा रहे हैं।सम्पूर्ण विश्व मे जो तनाव और ध्रुवीकरण हमे नजर आ रहा है उन सब की गहराई मे कहीं न कहीं अर्थतंत्र ही है।जहां सबसे अधिक व्यापार है वहीं सभी का ध्यान है।सम्पूर्ण विश्व के मुकाबले कुछ वर्षों पहले तक भी भारत काफी पिछड़ा हुआ नजर आता था,परन्तु यहां के वस्तुओं के ग्राहकों की संख्या को देख सम्पूर्ण विश्व के विकसित राष्ट्र भारत से विनिमय करने के लिये उत्सुक हैं।व्यापारिक अर्थतंत्र ही है जो कि सम्पूर्ण विश्व को भारत की ओर आकर्षित कर रहा है।मेरा कहने का तात्पर्य यह है कि गत कुछ दशकों मे अर्थिक विभेद भारत मे इतना अधिक रहा कि वह मानव शोषण के स्तर तक पहुंच गया।मानव के स्तर का मूल्यांकन उसके व्यवहार से न किया जाकर उसकी आर्थिक स्थिति से किया जाने लगा।परन्तु यह इसलिये हुआ कि भारत वर्षों से शोषित और पराजित मानसिकता को अपने भीतर समेटे बैठा था।विकासशील राष्ट्र की श्रेणी मे काफी लम्बा समय देखा।अभी जब हम विकसित राष्ट्र के काफी नजदीक हैं तो यह महसूस करते हैं कि अर्थव्यवस्था की मजबूती प्रतिव्यक्ति के जीवन स्तर को सुधारेगी।अर्थ का संग्रहण कुछ लोगों तक न होकर सबकी मेहनत और काबिलियत पर निर्भर करेगा।यही एक सम्पन्न और विकसित राष्ट्र की पहचान है।